इन्टरव्यू ३६
स्थान भेलूपूर

प्रः आप लोगों के नाम क्या हैं ?
जः हमारा नाम मो. सलिम, आसिम, नासिम है।

प्र: आप लोग ये क्या कर रहे हैं ?
ज: हम लोग ये तानी बना रहें हैं और लपैटन कर रहे हैं। इसके बाद घर पर जायेंगे तानी जुटेगी फिर साड़ी बनायेंगे, साड़ी बनाने के बाद मार्केट में जायागी और बिकेगी।

प्र: रेशम खरीदने से लेकर साड़ी बनने तक बतायेंगे ?
ज:सबसे पहले रेशम, तानी खरीदेंगे, फिर रंगने को देंगे उसके बाद रंगाई होती है, लपेटन होगा फिर घर पर जा कर तानी जुटेगी फिर साड़ी बुनेगी। फिर मार्केट में बिकेगीी

प्र: आप कितने साल से बुनकारी कर रहे हैं ?
ज: तीन साल से।

प्र: आपका कितना साल हुआ ?
ज: करीबन 15 साल।

प्र: बचपन से ही कर रहे हैं ?
ज: नही 12-13 साल से।

प्र: आपके बाप दादा भी यही काम करते थे ?
ज: हां।

प्र: आप लोगों का अपना करघा है ?
ज: अपना है।

प्र: आपका कितना करघा है ?
ज: चार।

प्र: आप एक ही घर के हैं ?
ज: हां।

प्र: चारों पर अपने लोग ही बुनते हैं ?
ज: नहीं, तीन पर मजदूर है।

प्र: आपके घर के कितने लोग करते हैं ?
ज: तीन लोग।

प्र: तानी आपकी खुद की होती है ?
ज: हां।

प्र: मजदूरों की मजदूरी कितनी हैं ?

ज: 450 रुपया एक साड़ी की जो मजदूर बिनेगा, हम जो बिनेंगे उसकी 650 सौ होगी।

प्र: क्यों ?
ज: क्योंकि वो हमारा नीजी है ना और उसपे बाहर का आदमी बिनेगा ना तो काट-पिट कर।

प्र: इसपर वो मौसम का भी असर होता होगा ?
ज: हां जब मौसम खराब होता है या पानी बरसता है तो ये नहीं बना सकते।

प्र: आज तो बदली है फिर ?
ज: ऐसे मौसम में चल जायेगा लेकिन बारिशमें यह बहुत ठण्डी है तब सुबह-सुबह लपेटन नहीं हो सकता। सूरज निकलता है तभी हो पाता है। इसको तो अभी हम लपेट रहे हैं जब ये घर जायेगा तो इसे जोड़ा जायेगा।
रूकावट
एक एक तार जोड़ा जायेगा हम लोग जोड़ते है तानी कारीगर हैं।

प्र: एक करघे से कितनी आमदनी हो जाती एक महीने में ?
ज: तीन हजार